

प्रसिद्ध
सचित्र कहानियां
विक्रम और बेताल



MAPLE KIDS

जब सपना सच हुआ

विक्रमादित्य ने फिर पेड़ पर चढ़कर बेताल को उतारा और अपने कंधे पर डालकर चलना शुरू कर दिया। बेताल ने फिर से कहानी सुनानी शुरू कर दी।

किसी समय पाटलिपुत्र में सत्यपाल नामक एक धनी व्यापारी रहता था। सत्यपाल के साथ ही चंद्रनाथ नामक बालक रहता था। वह सत्यपाल का दूर का रिश्तेदार था, जो बचपन में ही अनाथ हो गया था।

चंद्रनाथ के साथ सत्यपाल नौकरों जैसा व्यवहार करता था, जिससे चंद्रनाथ को बहुत दुःख होता था। चंद्रनाथ सत्यपाल की तरह अमीर बनने का सपना देखने लगा।

एक दिन दोपहर में सोते समय उसने सपना देखा कि वह धनी व्यापारी बन गया है और सत्यपाल उसका नौकर। वह नींद में ही बड़बड़ाने लगा, “ओ मूर्ख सत्यपाल! इधर आओ और मेरे जूते उतारो...”

उधर से गुजरते हुए सत्यपाल ने चंद्रनाथ का बड़बड़ाना सुन लिया। क्रोधित होकर उसने चंद्रनाथ को जूता फेंककर मारा और अपने घर से बाहर निकाल दिया।

चंद्रनाथ के पास अब रहने का ठिकाना नहीं था। वह दिन भर सड़कों पर घूमता रहा। अपनी बेइज्जती वह बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था। मन ही मन उसने बदला लेने का सोचा। चलते-चलते वह जंगल में जा पहुंचा। जंगल में एक साधु रहते थे। वह उनके पैरों में गिर गया।

साधु ने पूछा, “पुत्र, तुम इतने दुःखी क्यों हो?” चंद्रनाथ ने उन्हें अपनी आपबीती सुना दी। साधु ने कहानी सुनकर दयाभाव से कहा, “मैं तुम्हें एक मंत्र दूंगा। सपना देखने के बाद यदि तुम उस मंत्र को पढ़ोगे तो तुम्हारा सपना पूरा हो जाएगा। पर तुम इस मंत्र को बस तीन बार ही प्रयोग कर पाओगे।” ऐसा कहकर साधु ने उसे मंत्र सिखा दिया।

चंद्रनाथ को जैसे खजाना मिल गया था। प्रसन्न मन से वह वापस शहर आ गया। वह एक कुटिया के सामने सीढ़ियों पर लेट गया। लेटते ही आंख लग गई और उसने एक सपना देखा कि सत्यपाल उससे क्षमा याचना कर रहा है। वह अपने किए पर शर्मिन्दा है और अपनी पुत्री सत्यवती के साथ उसका विवाह करना चाहता है। चंद्रनाथ सोकर उठा और सोचने लगा, “सपना तो बहुत अच्छा था। मंत्र को जांचने का यह अच्छा मौका है” और वह मंत्र पढ़ने लगा।

सत्यपाल चंद्रनाथ को ढूँढ़ रहा था। उसे कुटिया की सीढ़ियों पर बैठा देख वह आया और

अपने किए के लिए उससे क्षमा मांगने लगा। फिर उसने अपनी पुत्री के विवाह का प्रस्ताव भी उसके सामने रखा। चंद्रनाथ को अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। मंत्र ने काम कर दिखाया था और उसका सपना पूरा हो रहा था।

चंद्रनाथ ने प्रस्ताव को स्वीकार कर सत्यवती से विवाह कर लिया। सत्यपाल ने चंद्रनाथ को अलग से व्यापार करवा दिया, जिससे दोनों सुखपूर्वक रह सकें।

एक दिन फिर चंद्रनाथ ने सपना देखा कि उसका व्यापार खूब चल पड़ा है और वह शहर का सबसे धनी व्यापारी बन गया है। सपने से जगने पर उसने फिर से मंत्र पढ़ा। मंत्र के प्रभाव से जल्दी ही उसका व्यापार चल निकला और उसने खूब धन कमाया। सपने के अनुसार वह शहर का सबसे धनी व्यापारी बन गया।



शहर के अन्य व्यापारी उससे ईर्ष्या करने लगे। चारों ओर चंद्रनाथ के व्यापार की बातें होने लगीं कि कैसे धनी बनने के लिए उसने कर की अवहेलना की है। ये सारी अफवाहें धीरे-धीरे राजा के कानों में भी पहुंची। राजा ने अपने सिपाहियों से इन अफवाहों की जांच

करवाई तो उन्हें सच पाया। चंद्रनाथ को सजा स्वरूप जितने कर की अवहेलना की गई थी, उसका दस गुना राजा को देना था।

इन सभी बातों से चंद्रनाथ क्रोधित हो उठा। उसी रात उसने सपना देखा कि वह पाटलिपुत्र का राजा बन गया है और उसके बारे में जिन व्यापारियों ने अफवाहें उड़ाई थीं, उन सबको वह सजा दे रहा है। सुबह उठने पर वह जैसे ही अंतिम बार मंत्र पढ़ने जा रहा था, उसे कुछ आभास हुआ।

चंद्रनाथ रोने लगा। उसने मंत्र नहीं पढ़ा और सीधा जंगल में साधु के पास जाकर उनसे मंत्र की शक्ति वापस लेने का अनुरोध किया। साधु उसकी बात सुनकर मुस्करा उठे।

बेताल ने राजा विक्रमादित्य से पूछा, फ“राजन, चंद्रनाथ ने मंत्र क्यों नहीं पढ़ा और पाटलिपुत्र का राजा क्यों नहीं बना?”

विक्रमादित्य ने उत्तर दिया, “चंद्रकांत को यह आभास हो गया था कि कड़ी मेहनत के बिना प्रसिद्धि और सफलता नहीं मिलती है। ऐसा जीवन जीने में कोई मजा नहीं है, जहां सारे सपने आसानी से साकार हों। उसे साधु ने मंत्र की शक्ति के द्वारा बहुत ही मूल्यवान सीख दी थी।”

“राजन! तुम महान हो। क्षमा करना, मुझे जाना पड़ेगा।” हंसता हुआ बेताल ऐसा कहकर वापस पेड़ पर चला गया।